## वार्तालाप-541, कलकत्ता, पार्ट-2, दिनांक 24.03.08

## Disc.CD No.541, dated 24.03.08 at Calcutta, Part-2

**समयः 6.07-6.46**

**जिज्ञासुः** अभी-2 बोला ना शिवबाबा सदा कायम रहेगा। तो शिवबाबा तो साकार में है और साकार तन.....

**बाबाः** सदा का मतलब ये है, शिव माना बिंदी और वो बिंदुरूपी स्टेज जो है वो परसेन्टेज में है। सतयुग के आदि में वो प्रजापिता की स्टेज सौ परसेन्ट है। दूसरे जन्म में थोडी कम होती, तीसरे, चौथे और अंतिम 84 वे जन्म में भी थोडी कम होती लेकिन पूरी खत्म नहीं होती।

**जिज्ञासु-**.....

**बाबा-** हाँ, इसलिए हर युग में वो आत्मिक स्टेज कुछ न कुछ रहती जरूर है।

**Student:** Just now it has been said that Shivbaba will be present always. But Shivbaba is in corporeal form and the corporeal body….

**Baba: 'Always'** means that Shiv means a point and that point-like stage is in percentage. In the beginning of the Golden Age that Prajapita is in hundred percent [point like] stage. A little less in the next birth, in the third, fourth birth and in the last 84th birth too it is a little lesser, but it does not end completely. (Someone said something.) Yes, so that soul conscious stage exists to some extent or the other in every age.

**समयः 6.50-8.45**

**जिज्ञासुः** बाबा, हमने रिवाइज़्ड मुरली में हमने पढ़ा है, ये है व्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा, वो है अव्यक्त। फिर लिखा है, है तो दोनों एक।

**बाबा-** ये है व्यक्त माना जिस समय ब्रह्मा बाबा जीवित थे। उनके मुख से ये वाणी चलाई जा रही थी। उस समय ब्रह्मा बाबा की तरफ इशारा किया, ये है व्यक्त।

**जिज्ञास-** ब्रह्माबाबा ..... प्रजापिता का पार्ट भी....

**Student:** Baba, I have read in a revised Murli that this is the *Vyakt* Prajapita Brahma….
**Baba:** This one?
**Student:** (This one is) *Vyakt* Prajapita Brahma. That one is *avyakt*.
**Baba:** Yes, please proceed.
**Student:** Then it has been written that both are one and the same.
**Baba:** This one is *vyakt* (manifest) means that when Brahma Baba was alive, when this *vani* was being narrated through his mouth, at that time it was hinted about Brahma Baba that this one is *vyakt* (manifest).
**Student:** The part of Brahma Baba…Prajapita….



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

**बाबा-** दोनों जीवित थे। इसलिए बोला- ये है व्यक्त और फिर वही प्रजापिता जब ज्ञान में आ जाता है, बेसिक नॉलेज ले लेता है, फाउन्डेशन बेसिक ज्ञान का पक्का हो जाता है, मैं आत्मा हूँ तो वो अव्यक्त स्टेज धारण कर लेता है। मनन-चिंतन-मंथन में स्थाई हो जाता है। इसलिए उन दोनों के लिए बताया एक। दोनों ही एक है। अभी जब तक वाणी चल रही थी तब तक था व्यक्त माना दुनियावी बातों में बुद्धि लगी हुई थी, हद की बातों में बुद्धि लगी हुई थी। ब्रह्मा की भी और प्रजापिता वाली आत्मा की भी व्यक्त बातों में बुद्धि लगी हुई थी। लेकिन जैसे ही ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोडा और प्रजापिता वाली आत्मा ज्ञान में आ जाती है बेसिक में तो वो मनन-चिंतन-मंथन की गहराई में चली जाती है; इसलिए वो अव्यक्त हो जाती है। शरीर होते हुए भी अव्यक्त हो जाती है। इसलिए बोला- चाहे व्यक्त है और चाहे वो अव्यक्त लेकिन हैं दोनों एक। ऐसे बोला है।

**Baba:** Both were alive. This is why it was said: This one is *vyakt* and when the same Prajapita enters the path of knowledge, when he obtains the basic knowledge, when the foundation of the basic knowledge becomes strong: I am a soul, he assumes an *avyakt* (unmanifest) stage. He becomes constant in thinking and churning. This is why it has been said for both of them that they are one and the same. Both of them are one and the same. Now, until the *vanis* were being narrated, he was *vyakt*, i.e. his intellect was busy in worldly affairs, in the affairs of a limited sense. The intellect of Brahma as well as the soul of Prajapita was busy in gross affairs. But as soon as Brahma Baba left his body and the soul of Prajapita enters the path of basic knowledge, it goes into the depth of thinking and churning. This is why he becomes *avyakt.* Despite having a body, he becomes *avyakt*. This is why it was said, whether he is *vyakt* or he is *avyakt*, both are one and the same. It has been said like this.

**समयः 09.00 – 10.36**

**जिज्ञासुः** बाबा, ब्रह्मलोक में एक फरलांग कितना होता है?

**बाबाः** फरलांग तो जो यहाँ की बात है वही वहाँ की बात बताई। लेकिन ब्रह्मलोक भी दो प्रकार के बता दिये। एक ब्रह्मलोक है- जो निराकारी दुनिया है और निराकारी दुनिया के ब्रह्मलोक के लिए यहाँ बोला है- तुम ब्रह्मलोक को यहाँ उतार लेंगे। परमधाम को तुम साकारी सृष्टि पर उतार लेंगे माना साकारी सृष्टि में जो आत्मिक स्टेज में टिकने वाली आत्मायें है उनको ज्यादा लम्बे-चौड़े घर की जरूरत नहीं है। उनकी दिल में ही इतनी जगह होगी कि थोड़ी जगह में बहुतों को समेट सकते हैं। जैसे शहद की मक्खियाँ होती हैं। कितनी मक्खियाँ रहती हैं छोटे से छत्ते में? हजारों की तादाद में और सब एक-दूसरें से कन्ट्रोल्ड। सब अपने-2 काम में लगी रहती हैं। एक-दूसरे से झगडते हैं कि तुमने हमारे माथे से माथा क्यों भिडाय दिया, तुम हमारे ऊपर क्यों चढ़ बैठी? कभी झगडा होता है? नहीं होता। तो ऐसे ही कहा जाता है कि



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दिल के अंदर जगह होती है। जगह की ज्यादा जरूरत होती नहीं है। दिल बड़ा होना चाहिए। एक फरलांग पाँचसौ-सातसौ करोड़ बिन्दु-2 आत्माओं के लिए काफी है।

**Student:** Baba, how much does one furlong measure in the Supreme Abode (*Brahmlok*)?
**Baba:** Furlong that is applicable here is applicable there as well. But *Brahmlok* itself is said to be of two kinds. One *Brahmlok* is the incorporeal world and for the *Brahmlok* of the incorporeal world it has been said here that you will bring the *Brahmlok* down to this place. You will bring down the Supreme Abode to this corporeal world, meaning the souls which become constant in the soul conscious stage do not require a very big house. Their heart itself will have so much space that they can accommodate many in a little space. For example, there are honeybees. How many honey bees live in a small bee-hive? Thousands (live in a bee-hive) and each one of them is controlled by another [higher to it]. Each one is busy in its own job. Do they fight with each other: why did you clash your head with mine? Why did you climb over me? Do they ever fight? They do not. So, similarly, it is said that if there is space in the heart there is no need for more room. The heart should be big. One furlong is enough for 5-7 billion point-like souls.

**समय: 13.10 - 15.32**

**जिज्ञासु:** जब बाबा दृष्टि देते हैं तो थोड़ा-2 आँखें बुझ जाती है।

**दूसरा जिज्ञासु:** आँखें छोटी हो जाती है।

**बाबा:** ऐसा है, एक होता है व्यक्त स्टेज, आँखें पूरी खुली हुई है और फिर भी पूरी आँखें खुली होते हुए भी निराकारी बिन्दु की स्टेज छूटती नहीं है। निराकारी बिन्दु रूपी स्टेज भी याद है, सुप्रीम सोल भी याद है और साथ-2 जिस आत्मा को दृष्टि दी जा रही है वो भी देखने में आती है। लेकिन कभी-2 क्या होता है, 63 जन्मों के हिसाब किताब राम वाली आत्मा के भी होते हैं कि नहीं होते हैं? होते है। और वो हिसाब किताब इतने तीव्र होते हैं कि ज्यादा शक्ति होने पर भी, ज्यादा ताकत पूरी पुरुषार्थ की पावर लगाने पर भी वो दोनों चीजे नहीं हो पाती कि सुप्रीम सोल बाप भी याद रहे और सामने वाली आत्मा भी याद रहे। तो सामने वाली आत्मा को कभी-2 ऐसे लगता है कि वो दृष्टि नहीं ले पा रही है।

**Student**: When Baba gives drishti, the eyes close a little.
**Another Student**: The eyes become smaller.
**Baba**: It is like this: one is the *vyakt* stage; the eyes are fully open and despite the eyes being fully open, the stage of the incorporeal point does not disappear; the incorporeal point like stage is remembered as well as the Supreme Soul is remembered and along with it the soul who is being given the drishti is also visible. But sometimes what happens is that… even the soul of Ram has the accounts of the 63 births, or not? He has. And those accounts are so powerful that in spite of having more strength, in spite of putting more force of *purusharth* both the things are not possible [together], that the Supreme Soul Father as well as the soul in front is remembered. So the soul in front feels that it is not able to take [the power of] drishti.



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जैसे अव्यक्त स्टेज है वो शंकर के चित्रों में भी दो प्रकार की दिखाई गई है। एक तो पूरी आँखें खुली हुई है लेकिन निराकारी स्टेज स्पष्ट दिखाई देती है और कभी-2 क्या होता है आँखें अर्ध .... (किसीने कहा- बन्द) नहीं बन्द नहीं। अर्ध नीमिनित। अगर बन्द हो जाए, नींद आ जाए तो झुटका भी आयेगा और झुटका आयेगा इसका मतलब नींद आ गई। तो नींद आने वाली बात नहीं। लेकिन वो निराकारी स्टेज में जैसी शक्ति लेने वाले को मिलनी चाहिए वैसी शक्ति लेने वाली आत्मायें भी नहीं खींच पाती और देने वाली आत्मा जो है वो उस निराकारी स्टेज में टिकने के लिए बहुत पुरुषार्थ होता है। दोनों को ही पुरुषार्थ करना पड़ता है।

Just as there is the *avyakt* stage, it is shown in two ways in the picture of Shankar as well, one is, in which both the eyes are open, but the incorporeal stage is clearly visible; while sometimes what happens is that the eyes are half… (Someone said: closed)… no, they are not closed, they are half open, if they are closed, if he feels sleepy, then he will nod off as well. If he nods off, it means he is sleepy. So it is not about sleeping but the extent of power that the soul taking [the drishti] should receive in the incorporeal stage; that soul taking [the drishti] is itself not able to pull that much power and [for] the soul giving the drishti… there is a lot of *purusharth* required for becoming constant in that incorporeal stage; both of them have to do *purusharth*.

**समयः 15.47-16.38**

**जिज्ञासुः** बाबा, राम को 14 वर्ष का वनवास दिखाया। ज्ञान से इसका क्या ताल्लुक?

**बाबाः** ज्ञान से इसका क्या कनेक्शन? जैसे राम को 14 वर्ष का वनवास गाया और राम के संगी-साथियों को भी दिखाया। ऐसे ही पाण्ड़वों को 13 वर्ष का वनवास दिखाया। पाण्डवों को 13 वर्ष का। तो ये जो 13 वर्ष की, 14 वर्ष की बातें हैं वो कहाँ की यादगार है? संगमयुग की यादगार है। पहले आराम से ठाठ में घर में बैठकर के पुरूषार्थ करते होंगे एक जगह स्थाई होकर के, बाद में फिर काँटो के जंगल में भटकना पड़े। तो जो काँटो के जंगल में भटकने की यादगार है वही 13-14 साल दिखा दिये।

**Student:** Baba, Ram is shown to have passed through 14 years of forest life. What is its connection with knowledge?

**Baba:** What is its connection with knowledge? Just as the 14 years of forest life of Ram has been sung and it has been shown for his companions as well; similarly, Pandavas have been shown to have spent 13 years in forest. 13 years in case of Pandavas. So, these topics of 13 years, 14 years are memorials of which time? They are memorials of the Confluence Age. Earlier they must be making efforts comfortably, luxuriously sitting at home, stable at one place; later on they have to wander in the jungle of thorns. So, the memorial of wandering in the jungle of thorns has been shown to be 13-14 years long.



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

**समयः 19.00-19.41**

**जिज्ञासुः** बाबा, 14 साल राम को वनवास हुआ, 14 साल बोला कब से? 98 से बाबा?

**बाबाः** जब से प्रत्यक्षता की शुरूआत हो उसी समय से कहा जायेगा। कृष्ण के लिए कहें तो कृष्ण गर्भ में कब तक है और गर्भ से बाहर कब हुआ? तो गर्भ से बाहर हुआ माना शुरूआत हो गई। कृष्ण के बिगर पाण्ड़व नहीं, पाण्ड़वों के बगैर कृष्ण नहीं।

**Student:** Baba, Ram spent 14 years in forest; from when do the fourteen years start? Baba is it from 1998?

**Baba:** It will be said to be from the time the revelation started; if it is said for Krishna, until when is Krishna in the womb and when did he come out of the womb? So, when he comes out of the womb, it means that the period (of forest life) has begun. There are no Pandavas without Krishna and there is no Krishna without the Pandavas.

**समयः 19.52-22.38**

**जिज्ञासुः** बाबा, कृष्ण को बचपन दिखाया दो। एक गोरा है, एक साँवला है। मक्खन खाते हुए दिखाते हैं दो रूप?

**बाबाः** कृष्ण के जो दो रूप दिखाये गये है एक श्याम और एक सुंदर। वास्तव में दो रूप होते नहीं हैं इकट्ठे लेकिन जो शास्त्रों में नाम दिया हुआ है श्याम-सुंदर वो इस समय वर्तमान स्वरूप की यादगार है। जो बेसिक नॉलेज वाले हैं, जिनकी बुद्धि में पूरा ज्ञान नहीं बैठा हुआ है वो समझते हैं कृष्ण ऊर्फ दादा लेखराज की आत्मा ही सन 68-69 तक श्याम पार्ट बजाती है और सतयुग में जब जन्म लेती है तो सुंदर पार्ट बजायेगी। तो उनके लिए उनकी बुद्धि में बैठा हुआ है कि वही श्याम-सुंदर का पार्ट है।

**Student:** Baba, the childhood of Krishna has been depicted in two forms. One is fair and the other is dark. He is shown to be eating butter in two forms.

**Baba:** Two forms of Krishna which have been depicted: one is dark and the other is fair. Actually two forms are not simultaneous, but the name '*Shyamsundar*' (dark and fair) coined in the scriptures is a memorial of the present time. Those who follow the basic knowledge, the ones in whose intellect the knowledge hasn't entered completely feel that Krishna alias Dada Lekhraj's soul plays a dark part till 68-69 and when he will be born in the Golden Age he will play a fair part. So, for them… it is in their intellect that that itself is the part of *Shyamsundar*.

लेकिन ये श्याम-सुंदर एक का नाम है या दो व्यक्तित्व के नाम हैं? एक का नाम है। और 68-69 तक तो व्यक्तित्व एक अलग है और सतयुग में जो जन्म लेगा वो तो व्यक्तित्व, वो पर्सनालिटी ही दूसरी हो जाती है। तो दो पर्सनालिटियों के अलग-2 नाम थोडे ही जोड़े गये हैं।



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

वास्तव में वो कृष्ण वाली सोल दादा लेखराज की सोल ही 76 से जिस तन में प्रवेश होकर के पार्ट बजाती है साकार में वो जब तक वो पुरूषार्थ सम्पूर्ण नहीं होता है, शिवोहम जो बात बुद्धि में बैठी हुई है वो खलास नहीं होती है, "मैं गीता का भगवान हूँ साकार में इस सृष्टि पर" ये बात जब तक खत्म न हो तब तक वो श्याम पार्ट बजाती है और जैसे ही ये बात खत्म हो जाती है वैसे ही वो आत्मा सुंदर पार्ट बजाती है। शरीर एक ही रहता है। संगमयुगी कृष्ण की यादगार है। सतयुग वाले कृष्ण की यादगार सुंदर पार्ट की नहीं है और न संगमयुग में दादा लेखराज के तन में जो कृष्ण की सोल ने पार्ट बजाया उसकी यादगार है। ये श्याम-सुंदर जो पार्ट है वो शिव-शंकर भोलेनाथ के पार्ट की यादगार है। जो गीता का भगवान संसार में प्रत्यक्ष होने वाला है।

But is this [name] *Shyam-Sundar* the name of one person or two personalities? It is the name of one person. And until 68-69 the personality is different and the one who will be born in the Golden Age, that personality itself is different. So, the names of two different personalities have not been combined? Actually, the body through which the soul of Krishna, the soul of Dada Lekhraj enters and plays a part in corporeal form since 76, until it completes its spiritual efforts, until the issue of *Shivoham* (I am Shiv) ends from the intellect, until the issue that 'I am God of the Gita in corporeal form in this world' ends it plays a dark part and as soon as this topic ends (from his intellect), that soul plays a fair part. The body remains the same. It is a memorial of the Confluence Age Krishna. The fair part is neither the memorial of the Golden Age Krishna nor a memorial of the part that the soul of Krishna played in the body of Dada Lekhraj in the Confluence Age. This part of *Shyam Sundar* is a memorial of the part of Shiv-Shankar Bholenath, who is going to be revealed as God of the Gita in the world.

**समयः 26.25**

**जिज्ञासुः** बाबा, वेद, विद्या, विनय, प्रतिष्ठा, चित्र दर्शन, निष्ठा, तप, जप, ज्ञान – ये नव लक्षण ब्राह्मणों का होता है। इसका क्या अर्थ है?

**बाबाः** देखो ब्राह्मणों की नौ कुरियाँ क्यों गाई गई हैं? नौ कुरियाँ गाई गई हैं माना नौ प्रकार के जो ब्राह्मण हैं वो नौ प्रकार के धर्मों में कनवर्ट होने वाले हैं। तो उन-2 धर्मों की जो भी विशेष गुण या अवगुण हैं उन ब्राह्मणों में विशेष रूप से समाये हुए हैं। इसलिए ब्राह्मणों की नौ कुरियाँ गाई हुई हैं। वही नौ विशेष गुणधर्म उनमें जरूर समाये हुए होने चाहिए; नहीं तो नौ कुरियों को अलग-2 क्यों किया गया? नौ धर्म हैं और नौ धर्मों से कनेक्टेड ब्राह्मणों की नौ कुरियाँ है जो अभी संगमयुग में तैयार हो रही हैं। उन नौ कुरियों में एक कुरि ऐसी है जिसका मुखिया वैल्यूलेस। उसकी कोई कीमत नहीं; बाकी आठ ऐसे हैं जिनकी वैल्यू है। उनको रत्नों के रूप में गिना जाता है। जैसे नौ रत्न हैं उसमें मोस्ट वैल्यूबल रत्न है हीरा



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

और नॉन-वैल्यूबल रत्न है पुखराज। पुखराज की कोई कीमत नहीं होती। ऐसे ही ये नौ गुणों की बात कर रहे हैं।

**Student:** Baba nine characteristics of Brahmins have been shown: *Ved, vidya* (knowledge), *vinay* (humbleness), *pratishtha* (respect), *chitra darshan* (glancing picures), *nishtha* (faith), *tap* (meditation), *jap* (chanting), *gyaan* (wisdom). What does it mean?
**Baba:** Look, why are nine categories of Brahmins famous? Nine categories are famous; it means that the nine kinds of Brahmins are the ones who convert into nine kinds of religions. So, the special virtues or bad traits of those nine religions are especially incorporated in those Brahmins. This is why, nine categories of Brahmins are famous. Those nine special characteristics should certainly be incorporated in them; otherwise, why have the nine categories been separated? There are nine religions and there are nine categories of Brahmins connected with the nine religions which are becoming ready now in the Confluence Age. Among those nine categories, one is such that its head is valueless. It does not have any value. As for the rest the remaining eight are such, they have value. They are counted as gems. Just as there are nine gems; among them the most valuable gem is diamond and the non-valuable gem is *Pukhraj* (topaz). *Pukhraj* does not have any value. Similarly, he is talking about nine virtues.

**समयः 29.28**

**जिज्ञासुः** बाबा, विनाश के बाद सतयुग में सात सागर रहेंगे कि नहीं**?**

**बाबाः** सतयुग में सात महाद्वीप रहेंगे कि नहीं?

**जिज्ञासु-** नहीं।

**बाबा-** जब सात महाद्वीप नहीं होंगे तो सात सागर भी नहीं होंगे। वहाँ एक ही सागर होगा। बाकी सब समुद्र में सारे ही महाद्वीप समुद्र में समा जायेंगे। तो एक ही सागर रह जायेगा या सात सागर होंगे? जब सात नारायणों ने ही अपनी खुदी को मर्ज कर दिया खुदा में तो सात महासागर कहाँ से रह जायेंगे? अभी तो टकरा रहे हैं और टकरायेंगे। ढ़ेर सारे प्रश्न कर रहे हैं। मनमनाभव नहीं बन गये लेकिन ऐसा भी टाईम आयेगा कि सारी दुनिया मनमनाभव हो जावेगी। कोई प्रश्न नहीं पैदा होगा। तो सात सागर अलग-2 कहे जायेंगे कि एक ही सागर रह जायेगा? एक ही सागर रह जायेगा।

**Student:** Baba, will the seven oceans exist after destruction in the Golden Age or not?
**Baba:** Will there be the seven continents in the Golden Age or not?
**Student:** No.
**Baba:** When there will not be the seven continents, there will not be the seven oceans either. There will be only one ocean there. Rest of the continents will merge into the ocean. So, will there be only one ocean or will there be seven oceans? When the seven Narayans themselves merged their selfishness (*khudi*) in God (*Khuda*), how will the seven oceans exist? Now they are clashing anyway and they **will** clash. They are raising numerous questions. They have not



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

become *manmanaabhav* (merging one's thoughts in God's thoughts) but a time will also come when the entire world will become *manmanabhav*. There will not be any question. So, will the seven oceans be called separate or will there be only one ocean? There will be only one ocean.

**समयः 30.43**

**जिज्ञासुः** चाइना में तिब्बती लोग जो रिवोल्यूशन कर रहे हैं,... लड़ाई लड़ रहे हैं, उसमे बेहद का क्या बात है?

**बाबा-** कौन?

**जिज्ञासु-** चाइना में। तिब्बत को लेकर जो युद्ध कर रहे है।

**बाबाः** हर धर्म के दो भाग हो गये। चाइना कौनसा धर्मखंड है? बौद्धी धर्मखंड है। लेकिन जो बौद्धी धर्मखंड हो या दुनिया का कोई भी धर्मखंड हो वो कलियुग के अंत में आते-2 नास्तिकवाद से प्रभावित हो जाता है या नहीं हो जाता है?

**जिज्ञासु-** हो जाता है।

**बाबा-** तो वो हीनयान कहा गया। हीनता की और जा रहे है। जो हीनता की और जा रहे है वो अपनी हीनभावना को ही फैलावेंगे और एक है महायान। जो भगवान को बुद्ध के रूप में मानते है। वो मूर्तियों को तोड़ने वाले और वो मूर्तियों को जोड़ने वाले, बनाने वाले। इसलिए तिब्बत में ज्यादा प्रभाव कौनसे धर्म का है? जो साकार महात्मा बुद्ध को मानने वाले हैं। इसलिए झगड़ा तो जरूर होगा।

**Student:** Baba, in China, the Tibetans who are doing a revolution, who are fighting, what is it in the unlimited sense?
**Baba:** Who?
**Student:** In China. The fight that is going on the issue of Tibet.
**Baba:** Every religion is divided into two sections. To which religious land does China belong? It is a Buddhist religious land. But whether it is a Buddhist religious land or any religious land of the world, does it become influenced by atheism by the end of Iron Age or not?
**Student:** It is influenced.
**Baba:** So, it was called Heenyaan. They are going towards inferiority (*heenata*). Those who are going towards inferiority will spread their lowly feelings only and one is Mahayaan who accept God in the form of Buddha. They (i.e. Heenyaan) are the ones who break the idols, and they (i.e. Mahayaan) are the ones who construct the idols or make idols. This is why Tibet is under the influence of which religion to a greater extent? Those who believe the corporeal Mahatma Buddha. This is why there will certainly be a dispute.



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

**समयः 32.23**

**जिज्ञासुः** बाबा साइलेंस पॉवर क्या है और साइलेंस पॉवर कैसे जमा किया जाए?

**बाबाः** कॉन्सट्रेशन ही साइलेन्स पॉवर है और कॉन्सट्रेशन वही कर सकता है जिसको आत्मा और परमात्मा का असली परिचय मिल गया। परिचय के आधार पर जो जितना गहराई से याद करेगा उतना उसको पॉवर मिलेगी। ये है सूक्ष्म पॉवर, उन साइन्सदानों की है एटम की पावर। वो एटम उनका है स्थूल। जो स्थूल अणु है उनको काट-काटकर के सूक्ष्म बनाते है। जैसे कोई दवाई होती है। कोई दवाई को जितना ज्यादा घिसा जायेगा उतनी ज्यादा पॉवरफुल बन जाती है। ऐसे ही ये आत्मा को भी घिसना होता है स्मृति के खरल में। जितना हम आत्मिक स्थिति को महीन बनाते जावेंगे उतनी हमारी पॉवर कॉन्सट्रेशन की बढ़ती जावेगी। अभी पॉवर बहुत कम है।

**Student:** Baba, what is the power of silence and how to accumulate the power of silence?

**Baba:** Concentration itself is the power of silence. And only that person who has the true introduction of the soul and the Supreme Soul can concentrate. The more deeply someone remembers (Baba) on the basis of of the introduction, he will get power to that extent. This is subtle power. Those scientists have the power of atom. Their atom is physical. They break the physical atom and make it subtle. For example, some medicine. The more the medicine is rubbed, the more powerful it becomes. Similarly, this soul has to be rubbed on the grinding stone of remembrance. The subtler we make our soul conscious stage the power of our concentration will go on increasing to that extent. Now the power is very less.

**जिज्ञासु-** लेकिन बाबा आत्मिक स्थिति तो सारा दिन में चले या अमृतवेला चलना है?

**बाबा-** फाउन्डेशन में जो काम जितना अच्छा हो जायेगा वो लास्ट तक भी अच्छा ही देता रहेगा। जैसे मकान बनाया जाता है तो मकान का फाउन्डेशन अर्थात नींव जितनी गहरी और जितनी पक्की बना दी जायेगी उतनी जास्ती लम्बी और मलटिस्टोरी बिल्डिंग खड़ी की जा सकती है। अगर फाउन्डेशन कच्चा होगा तो बिल्डिंग भी कच्ची रह जावेगी। ऐसे ही जो ज्ञान में आते है जिस समय ज्ञान में आते हैं उस समय ही जिन्होंने आत्मिक स्थिति को, प्रैक्टिस को ज्यादा पक्का कर दिया उनका फाउन्डेशन पक्का हो जाता है और जिन्होंने कच्चा फाउन्डेशन डाला वो अंत मते उनकी वैसी ही कमजोर गति हो जायेगी। क्या पूछा?

**Student:** But Baba should we remain in the soul conscious stage throughout the day or at *amritvela*?

**Baba:** Whichever task is done nicely at the stage of foundation, will give good results till the end. For example, when a building is constructed, the deeper and stronger the foundation of the building is made, the more long-lasting and multi-storey building can be constructed. If the foundation is weak, the building will also remain weak. Similarly, those who enter the



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

path of knowledge, the time when they enter the path of knowledge, the more firm they make the practice of soul consciousness their foundation becomes strong and those who laid a weak foundation will reach a weak destination as per their thoughts in the end. What did you ask?

**जिज्ञासु-** आत्मिक स्थिति सारा दिन में भी तो हो सकता ना?

**बाबा-** बताया ना अमृतवेला है शुरूआत। अमृतवेला माना सूर्य निकला। अमृतवेले का मतलब क्या है? सूर्य निकलने का टाईम और आत्मा जब ज्ञान में आती है तभी उसके लिए सूर्य उदय होता है। भोर भयो और सवेरा, आँख खुली और सवेरा। तो यहाँ ज्ञान की आँख जब जिसकी खुलती है उसके लिए वो अमृतवेला है। उस अमृतवेले फाउन्डेशन के वेले में उस बेहद के वेले में जो जितनी आत्मिक स्थिति की प्रैक्टिस पक्की कर लेता है वो उतना ही अंत समय में उसका सुहाला गुजरेगा। पॉवरफुल आत्मा बनकर के संसार में प्रत्यक्ष होगी और जिसने ज्ञान में आने के टाईम पर ही अलबेलापन धारण कर लिया, कुछ ध्यान दिया कुछ नहीं दिया फाउन्डेशन कचच्चा हो गया। वो है बेहद का अमृतवेला और ये सबेरे जो 2 से 4-5 बजे के बीच में होता है ये है हद का अमृतवेला। इसकी भी विशेषता है। प्रैक्टिस कर के देख लो। अच्छी तरह से 2-4, 3-4 बार चाय पीकर के बैठो। चाय पियेंगे तो अलर्टनेस आ जायेगी लेकिन वो अल्पकाल की होगी। लेकिन प्रैक्टिस का पता चल जायेगा कि सारा अमृतवेला सोना नहीं और फिर सारा दिन अवस्था देखो कितनी बढ़िया रहती है। फिर वो आदत न पड़ जाये चाय पीने की नहीं तो सब सत्यानाश कर देगी।

**Student:** We can remain in the soul conscious stage throughout the day as well, can't we?

**Baba:** You have been told, haven't you, that *amritvela* is the beginning. *Amritvela* means the Sun has risen. What is meant by *amritvela*? The time of sunrise and when a soul enters the path of knowledge, the Sun rises for it at that very time. It is morning when the sun rises, it is morning whenever you open your eyes. So, here, whenever someone's eye of knowledge opens, it is *amritvela* for him. In that period of *amritvela*, of foundation, the more someone makes the practice of soul conscious stage firm, the more he will spend a good time in the end. He will be revealed in the world as a powerful soul and the one who remained careless at the time of entering the path of knowledge itself, if he partly pays attention and partly does not pay attention, his foundation becomes weak. That is an *amritvela* in an unlimited sense and this *amritvela* between 2 to 4-5 in the morning is an *amritvela* in a limited sense. There is a specialty of this *amritvela* also. You can practice and check. Drink tea nicely 2-3 or 3-4 times and sit. If you drink tea you will develop alertness but that is for a temporary period. But you will know about the practice. You should not sleep throughout the *amritvela* and observe how fine your stage remains throughout the day. Then you should not develop that habit of drinking tea otherwise it will ruin everything.



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

**समयः 36.45-37.43**

**जिज्ञासुः** बाबा आदिदेव-आदिदेवी, आदिनाथ-आदिनाथिनी, एडम-ईव। आदिदेव तो प्रजापिता हो गया। आदिदेवी कौन हुआ? आदिनाथिनी, आदिदेवी कौन हुआ?

**बाबाः** जो नई सृष्टि की आदि करे सो आदिदेवी। जो नई सृष्टि की आदि करे....

**जिज्ञासु-** छोटी मम्मी या बड़ी मम्मी?

**बाबा-** दोंनो ही साथ होकर के कार्य करती है या दोंनो के अलग होने से कार्य सम्पन्न होता है?

**जिज्ञासु-** साथ ।

**बाबा-** तो फिर? ये तो है ही प्रवृत्तिमार्ग। ऐसे नहीं अकेली लक्ष्मी से काम चल जाता है। लक्ष्मी भी चाहिए तो महालक्ष्मी भी चाहिए, नारायण भी चाहिए तो महानारायण भी चाहिए, ब्राह्मण भी चाहिए तो महाब्राह्मण भी चाहिए। ये ज्ञान ही प्रवृत्तिमार्ग का है।

**Student:** Baba, *Adidev-Adidevi* (the first male deity and the first female deity), *Adinath-Adinathini*, Adam-Eve. *Adidev* is Prajapita. Who is *Adidevi*? Who is *Adinathini, Adidevi*?
**Baba:** The one who starts the new world is *Adidevi*. The one who starts the new world....
**Student:** Is it the junior mother or the senior mother?
**Baba:** Do both of them work together or is the task accomplished when both are separated?
**Student:** When they are together.
**Baba:** So, then? This is indeed a path of household. It is not that the task is accomplished by Lakshmi alone. Lakshmi as well as Mahalakshmi is required; Narayan as well as Mahanarayan is required; Brahmin as well as Mahabrahmin is required. This knowledge itself is of the household path.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.



Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info